तुम बच्चे हो। बच्चे की अगर तबीयत ठीक नहीं होगी तो कहेंगे भले यहां सो जाओ। इसमें कोई हर्जा नहीं है ;क्योंकि सिकीलधे बच्चे हैं अर्थात् 5000वर्ष बाद फिर से आकर मिले हैं।किसको मिले हैं? बेहद के बाप को।यह भी तुम बच्चे ही जानते हो जिनको निश्चय है। बरोबर हम तो बेहद के बाप से मिले हैं ;क्योंकि बाप होते ही है हद के और बेहद के।दुःख में सभी बेहद के बाप को याद करते हैं।सतयुग में (लौकिक) ही बाप को याद करते हैं ;क्योंकि वहां तो है ही सुखधाम। लौकिक बाप उनको कहा जाता है जो इस लोक में जन्म देते हैं।पारलौकिक बा पतो एक ही बार आकर तुमको अपना बनाते हैं।तुम रहने वाले भी बाप के साथ अमरलोक के हो। जिसको परलोक, परमधाम भी कहा जाता है।वो है परे ते परे धाम। स्वर्ग को कोई परे ते परे नहीं कहेंगे। स्वर्ग नर्क यहां ही होता है। नई दुनियां को स्वर्ग, पुरानी दुनियां को नर्क कहा जाता है। अभी है पतित दुनियां। पुकारते भी हैं हे पतित–पावन आओ।सतयुग में ऐसे नहीं कहेंगे। जब से रावणराज्य होता है तब से पतित बनते है।इनको कहेंगे पांच विकारों का राज्य। सतयुग में है निर्विकारी राज्य। भारत की कितनी जबरदस्त महिमा है ;परंतु विकारी होने कारण भारत की महिमा को जानते ही नहीं हैं।भारत ही सम्पूर्ण निर्विकारी था। तब ल.ना. राज्य करते थे। अब वो राज्य नहीं है। वो कहां गये यह भी पत्थरबुद्धियों को पता ही नहीं है। और सभी अपने2 धर्म स्थापकों को जानते हैं।एक भारतवासी ही हैं जो न तो अपने धर्म को जानते ना ही अपने धर्म स्थापक को जानते हैं। और धर्म वाले अपने धर्म को तो जानते हैं ;परंतु वो फिर कब स्थापन करने आवेंगे वो नहीं जानते हैं।सिक्ख लोगों को यह पता नहीं है कि हमारा सिख धर्म पहले नहीं था। गुरू नानक ने आकर स्थापन किया है। तो जरूर फिर सिक्ख धर्म नहीं रहेगा।तब ही गुरू नानक आकर फिर स्थापन करेंगे ;क्योंकि वो वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी रिपीट होती है ना। नानक अभी कहां है यह भी कोई नहीं जानते हैं।क्रिश्चियन धर्म भी नहीं था।फिर स्थापन हुआ। पहले नई दुनियां थी। एक धर्म था।सिर्फ तुम भारतवासी ही थे। फिर तुम 84जन्म लेते2 यह सब भूल गये हो कि हम ही देवता थे। फिर हमी ने 84 जन्म लिये हैं। तब बाप कहते हैं तुम अपने 84जन्मों को नहीं जानते हो। मैं बताता हूँ। आधा कल्प रामराज्य था। फिर रावणराज्य हुआ है। पहले है सूर्यवंशी घराना। फिर चंद्रवंशी घराना रामराज्य। सूर्यवंश में ल.ना. का राज्य था।हमी जो सूर्यवंशी घराने के थे सो ही 84 जन्म लेते2 अब रावणवंशी बने हैं।आगे पुण्यात्माओं के घराने में थे।अब पापात्माओं के घराने के बने हैं। 84जन्म लेते हैं। वो तो 84 लाख कह देते हैं। अब 84लाख का कौन बैठ विचार करेंगे?इसलिए कोई का विचार चलता ही नहीं है।अब तुमको बाप ने समझाया है। तुम बाप के आगे बैठे हो।निराकार बाप और साकारी बाप दोनों ही भारत में नामी–ग्रामी हैं।गाते भी हैं ;परंतु बाप को जानते नहीं हैं।अज्ञान नींद में सोये हुये है।।ज्ञान से जागृति होती है।रोशनी में मनुष्य कब धक्का नहीं खाते हैं। अंधेरे में मनुष्य धक्के ही खाते रहते हैं।भारतवासी ही पूज्य थे। अब फिर पुजारी हैं। ल.ना. पूज्य थे ना। यह किसकी पूजा करेंगे? अपने चित्र बनाकर अपनी ही पूजा तो नहीं करेंगे ना। यह हो नहीं सकता। तुम बच्चे जानते हो हम ही पूज्य सो पुजारी कैसे बनते हैं।और कोई यह बातें समझ नहीं सकेंगे। बाप ही समझाते हैं इसलिए ही गाते हैं ईश्वर की गत–मत न्यारी है। अब तुम बच्चे जानते हो बाबा ने हमारी सारी ही दुनियां से गत–मत न्यारी ही कर दी है। सारी दुनियां में अनेक मतमतान्तर हैं। यहां तुम ब्राह्मणों की है एक मत। ईश्वर की मत और गत। गत अर्थात् सदगति। सदगति दाता तो है ही एक बाप। गाते भी हैं सर्व की सदगति दाता राम ;परंतु पत्थर बुद्धि होने कारण समझते नहीं हैं कि राम किसको कहा जाता है। शिव को थोड़े ही राम कहा जाता है ;परंतु पत्थर बुद्धि शिव को भी राम कह देते हैं।कहेंगे जिधर देखो राम ही राम रमते हैं। रमते तो मनुष्य हैं ना। तो इसको ही कहा जाता है अज्ञान .....। फिर सोझरे में है सुख।

अंधेरे में ही पुकारते हैं ना। बंदगी करना माना ही बाप को बुलाना। भीख मांगते हैं।देवताओं के मंदिर में भी जाकर भीख मांगते हैं। शांति देवा.....तो यह भीख मांगना हुआ ना। सतयुग में तो भीख मांगने की दरकार ही नहीं होती। भिखारी को इनसालवेंट कहा जाता है। सतयुग में तुम कितने सालवेंट थे।इसको कहा जाता है सालवेंट भारत। अब है इनसालवेंट भारत। यह तो कोई भी समझ सकते हैं। कल्प की आयु उल्टी—सुल्टी लिख देने से मनुष्यों का माथा ही खराब हो गया है। बाप बहुत ही प्यार से बैठ समझाते हैं। कल्प पहले भी तुम बच्चों को समझाया था कि पतित—पावन मुझ बाप को याद करो तो तुम पतित से पावन बन जावेंगे। पतित कैसे बने हो?विकारों की खाद पड़ने से। कट(जंग) लग गया है। इस समय के मनुष्य सब ही जंग खाये हुये हैं।अब वो जंक कैसे निकले?मुझे याद करो। देह अभिमान छोड़ कर देही अभिमानी बनो।अपने को आत्मा समझो। पहले तुम हो आत्मा। फिर शरीर लेते हो। आत्मा अमर है। शरीर तो मृत्यु को पाता है। सतयुग को कहा ही जाता है अमरलोक। दुनियां भर में यह कोई भी नहीं जानते कि अमरलोक था। फिर मृत्युलोक कैसे बना?अमरलोक अर्थात् अकालेमृत्यु नहीं होती है। वहां आयु भी बड़ी होती है। वो तो है ही पवित्र दुनियां। तुम राजऋषि हो ना। ऋषि पवित्र को ही कहा जाता है।तुमको पवित्र किसने बनाया? उनको तो बनाते हैं शंकराचार्य। तुमको बना रहे हैं शिवाचार्य। यह कोई पढ़ा हुआ नहीं है। इन द्वारा तुमको शिवबाबा आकर पढ़ाते हैं। शंकराचार्य तो गर्भ से जन्म लिया है। कोई उपर से कूद कर नहीं आया। बाप तो इनमें प्रवेश करते हैं। आते हैं ,जाते हैं।मालिक हैं। जिसमें चाहिए उसी में जा सकते हैं। बाबा ने समझाया है कोई का कल्याण करने अर्थ मैं जाता हूँ। आता तो पतित तन में ही हूँ ना। इनमें तो फिर भी ज्ञान है। कोई बिल्कुल ईडियट है। उनमें भी प्रवेश करता हूँ कोई के कल्याण अर्थ।सिर्फ ब्राह्मण हो। बहुतों का कल्याण करता हूँ ;परंतु माया भी कम नहीं है।मेरे बदले माया भी कइयों में प्रवेश कर लेती है। फिर कहती है मैं शिव हूँ। फलाना हूँ। माया भी बड़ी शैतान है। समझदार बच्चे अच्छी रीति समझ जावेंगे कि यह किसकी प्रवेशता है। शरीर तो उनका मुकर्रर यही है ना। फिर दूसरों का हम सुनें ही क्यों?अगर सुनते हो तो भी बाबा से पूछो इनकी यह बातें राइट हैं वा रांग?बाबा झट समझा देंगे।कोई तो ब्राह्मणी भी इन बातों को समझ नहीं सकती है कि यह क्या है, कौन है।कोई2 में तो ऐसे प्रवेशता होती है जो कि चमाट मार देते हैं।गालियां भी देने लग पड़ते हैं।अब बाप थोड़े ही गाली देते होंगे। इन बातों को भी कोई2 बच्चे समझ नहीं सकते हैं।फर्स्ट क्लास बच्चे भी कहीं2 भूल जाते हैं। सभी बातें पूछनी चाहिए ;क्योंकि बहुतों में माया प्रवेश कर लेती है। फिर ध्यान में जाकर क्या2 बोलते रहते हैं। इससे भी बहुत सम्भाल चाहिए। बाप को पूरा2 समाचार देना चाहिए। फलानी में मां आती है ,फलानी में बाबा आते हैं। इन सब बातों को छोड़ शिवबाबा को एक ही फरमान है कि मामएकम् याद करो।बाप को और सृष्टि चक्र को याद रखो। रचता और रचना का स्मरण करने वाली की शक्ल सदैव हर्षित रहेगी। बहुत हैं जिनको स्मरण होता ही नहीं है। कर्मबंधन बहुत भारी है। विवेक कहता है जबकि बेहद का बाप मिला है तो कहते हैं कि मुझे याद करो तो क्यों नही हम याद करें। कुछ भी होता है तो बाप से पूछो। बाप समझावेंगे। कर्मभोग तो अभी रहा हुआ है ना। कर्मातीत अवस्था हो जावेगी तो फिर तुम सदैव हर्षित रहेंगे। तब तक कुछ ना कुछ होता ही रहेगा। यह भी जानते हो मिरुआ मौत मलूका शिकार। विनाश होना है। तुम फरिश्ते बनते हो। बाकी तो थोड़े ही दिन इस दुनियां में हो। फिर तुम बच्चों को यह स्थूल वतन भासेगा ही नहीं। सूक्ष्मवतन और मूलवतन ही भासेगा। सूक्ष्मवतनवासी को कहा जाता है फरिश्ता। वो तो बहुत कम समय बनते हो जबकि तुम कर्मातीत अवस्था को पाते हो। सूक्ष्मवतन में हड्डी—मांस होता ही नहीं है। हड्डी—मांस ही नहीं है तो बाकी क्या रहा?सिर्फ सूक्ष्म शरीर ही होता है।